Vol III Issue VIII Feb 2014

Impact Factor : 2.2052(UIF)

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 2.2052(UIF)

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-8 | Feb-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

कृषि के लिये किसानों की सूचना आवश्यकताएं और उनकी प्राप्ति के लिये विभिन्न सूचना स्त्रोतों का प्रयोग

विक्रम कौषिक , परमवीर सिंह

असोसिएट प्रोफेसर, संचार प्रबन्धन एवं तकनीक विभाग, गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एव तकनीकी विश्वविद्यालय, हिसार
असीसटेंट प्रोफेसर, जनसंचार केन्द्र, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, रांची

सारांश :-सूचना संचार तकनीक वर्तमान में प्रत्येक मानस पटल को प्रभावित कर रही है। सूचना संचार तंत्र जहां दूरियां मिटाने का कार्य कर रहा है वहीं जागरूकता लाने में भी महत्वपूर्ण कार्य कर सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज दिन प्रति दिन नई संचार तकनीकों का विकास हो रहा है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति की सूचना तक सरल पहुंच सम्भव हो रही है। पहले ज्ञान को ताकत माना जाता था लेकिन आज जिसके पास सूचना है वह शक्तिशाली है। नई सूचना संचार तकनीकों ने समाज के प्रत्येक वर्ग तक सूचनाओं के सम्प्रेशण को सुनिश्चित किया है। नई सूचना तकनीकों का प्रयोग सिर्फ संचार के लिये ही नहीं किया जा रहा बल्कि रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सामाजिक पहलूओं से सम्बन्धित सूचनाएं जनता को उपलब्ध करवाकर उन्हे जागरूक किया जा रहा है। वर्तमान में टेलीविजन, रेडियो और समाचार–पत्र जैसे परम्परागत संचार माध्यमों के साथ–साथ कई नये संचार माध्यम भी अपनी महत्ती भूमिका की वजह से प्रयोग में लाये जा रहे हैं। मोबाईल, इंटरनेट आदि नये संचार माध्यमों का प्रयोग समाज का प्रत्येक वर्ग बडे उदार मन के साथ कर रहा है। सरकार भी इन नये संचार माध्यमों के विकास के प्रति बडी गम्भीर दिखती है। पिछले एक दशक में मोबाईल और इंटरनेट जैसी तकनीकों ने बड़ी तेजी के साथ अपने पांव पसारे हैं इसी कारण भारत दूनिया के सबसे बडे बाजारों में शामिल हो गया है।

प्रस्तावना :

इंटरनेट के तेजी से होते फैलाव के कारण दूनिया एक वैश्विक ग्राम में तबदील हो गई है। आज प्रत्येक व्यक्ति इंटरनेट का प्रयोग करके अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की सूचनाओं को कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर सकता है। इंटरनेट की इसी खूबी के कारण ज्यादातर राज्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सूचनाओं के प्रवाह को बढ़ाने के लिये इन संचार माध्यमों का प्रयोग कर रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में विस्तारित होने के बाद इंटरनेट अब ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी जड़े जमाने के प्रयास कर रहा है जिसमें सरकार खुले दिल से सहायता कर रही है।

ऐसा अक्सर कहा जाता है कि भारतीय किसान जितनी मेहनत करते हैं उतना फल उनके परिश्रम का उन्हे नहीं मिल पाता। इसका मुख्य कारण है ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना का अभाव। देश के ज्यादातर हिस्सों में सूचना के नये माध्यम ना होने के कारण किसानों को सूचनाएं बहुत कम और विलम्ब से मिल पाती हैं जिनका परिणाम किसानों को आर्थिक घाटे के रूप में उठाना पड़ता है। किसानों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फसल मूल्य, गुणवतापूर्ण बीज, खाद, कीटनाशक और फसल प्रबन्धन जैसी सूचनाएं मिल ही नहीं पाती जिसकी वजह से किसान अपनी फसल गुणवतापुर्ण पैदा नहीं कर पाता और उसे फसल का मूल्य बहुत कम मिलता है। सूचना संचार तकनीकों का सही प्रयोग ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाये तो किसानों को फसल मूल्य, कृषि आगतों और अन्य आवश्यक सूचनाएं प्रदान करके उनका जीवन स्तर उन्नत किया जा सकता है।

सही समय पर सही सूचना सही माध्यम के द्वारा ना मिल पाने के कारण किसानों को कई नुक्सान उठाने पड़ते हैं जिनमें फसल का आधा अधुरा मूल्य मिलना और फसल का ज्यादातर हिस्सा व्यर्थ हो जाना मुख्य है। एक अनुमान के अनुसार फसल और अन्य कृषि उत्पादों का सही प्रबन्धन और विपणन ना होने के कारण कुल अनाज का 7 प्रतिशत, दूध का 40 प्रतिशत, फल व सब्जियों का 30 प्रतिशत और बीज व मसालों का 13 प्रतिशत भाग बाजार में आने से पहले ही खराब हो जाता है। जिसकी कीमत 60000 करोड़ रूपये प्रतिवर्ष होती है। यानी हम एक तरफ तो गरीबी के ढेर पर बैठे लाखों गरीबों को भूखे मरते हुये देखते हैं वहीं दूसरी ओर मेहनत मजदूरी करके पैदा किये गये उत्पादों को भी सही तरीक से बाजार तक नहीं पहुंचा पाते हैं। इस नुक्सान के पिछे सबसे बड़ा कारण किसानों के पास सही सूचनाओं का ना होना है। किसानों को यह पता ही नहीं होता कि उसे अपनी फसल का सही मूल्य कहां मिल पायेगा और फसल को बिना खराब हुए कैसे बाजार तक ले जाया जा सकता है। अगर ग्रामीण क्षेत्रों में नये संचार माध्यमों का जाल बिछा कर तेजी से सूचनाएं किसानों तक पहुंचाई जाये तो किसान इस सब नुक्सान से पार पाने में सफल हो सकता है।

किसानों को बेहतर फसल मूल्य और विपणन की सूचनाओं के साथ–साथ सही भविष्य फसल, सही बीज, खाद और कीटनाशक के

बारे में भी ताजा सूचनाओं की आवश्यकता होती है जिसके लिये ग्रामीण क्षेत्रों में कोई भी तंत्र विकसित नहीं किया गया है। इस वजह से ऐसी सूचनाओं के लिये किसानों को अपने साथी किसानों या कृषि विकास अधिकारियों पर निर्भर रहना पडता है जो कि खुद ऐसी सूचनाओं के प्रति जागरूक नहीं होते। इस तरह की सूचनाएं भी नये संचार माध्यमों के द्वारा दी जानी चाहिए ताकि किसान समय रहते भविष्य में ज्यादा मुनाफा देने वाली फसल बो सके और गुणवता वाले बीज, खाद और कीटनाशक प्रयोग करके ज्यादा मुनाफा कमा सकें।

ग्रामीण क्षेत्रों में नई युवा पीढ़ी खेती को अपनाने में ज्यादा रूचि नहीं दिखा रही जिसके बड़े कारण बार–बार होने वाला नुक्सान, उत्पादन में अनिश्चितता और फसल के मूल्य में होने वाला उतार–चढ़ाव आदि हैं। इस वजह से युवा पीढ़ी कृषि को छोड़कर दूसरे व्यवसाय की ओर रूख कर रहे हैं। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में ताजा सूचनाओं का अभाव होने के कारण वे आधुनिक व्यवसाय को नहीं अपना पा रहे हैं। युवा पीढ़ी को गैर कृशि व्यवसाय के साथ जोड़ने के लिये भी सही सूचनाओं की आवश्यकता होती है जो कि जनसंचार के नये माध्यमों द्वारा आसानी से उपलब्ध करवाई जा सकती हैं। इसी के साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक जागरूकता कुछ ऐसे पहलू हैं जिनमें किसानों को सूचनाओं की बहुत ज्यादा आवश्यकता रहती है। किसानों को इनसे सम्बन्धित सूचनाएं प्रदान किया जाना बेहद जरूरी है ताकि किसानों को सही मायने में जागरूक किया जा सके।

सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में शुरू की गई ऑन–लाईन सूचना सेवाएं–

डिजिटल विकास ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दी है। कुछ पहलूओं को छोड़ दे तो आज हम जागरूक समाज को देख सकते हैं। सूचना संचार तकनीकों ने भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज को बहुत हद तक प्रभावित किया है और उसके सकारात्मक परिणाम देखते हुए सरकार ने नई संचार तकनीकों का जाल बिछाना शुरू किया है। ग्रामीण क्षेत्रों की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये कई राज्य सरकारों ने केन्द्र सरकार की सहायता से इंटरनेट के द्वारा ऑनलाईन सेवाओं की शुरूआत की है जिसमें ग्रामीणों को भूमि रिकोर्ड़, जन्म प्रमाण–पत्र, राशन कार्ड़ और पासपोर्ट आदि दस्तावेज ऑनलाईन बनाने की सुविधा दी गई है। ऑनलाईन सेवाओं के बढ़ते प्रसार का परिणाम ग्रामीणों में आई जागरूकता के रूप में देखा जा सकता है।

भारत में बहुत सी परियोजनाएं चलाई गई हैं जिनमें इंटरनेट के माध्यम से सूचनाएं और सेवाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। राजस्थान की ई–मित्र परियोजना, हरियाणा की ई–दिशा परियोजना, महाराष्ट्र की तार परियोजना व ज्ञानदूत परियोजना कुछ ऐसे प्रोजेक्टस हैं जिनमें ग्रामीणों को इंटरनेट के माध्यम से ताजातरीन सूचनाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

पांडेचेरी में एस0 स्वामीनाथन फाउंडेशन द्वारा ग्राम ज्ञान केन्द्र खोले गये हैं जिनके माध्यम से ग्रामीण समूदाय को सूचना व ज्ञान देने का कार्य किया जा रहा है। वहीं महाराष्ट्र में तार परियोजना के माध्यम से इंटरनेट का प्रयोग करके किसानों को गन्ने, रिफायनरी और बैंकिग से सम्बन्धित सभी सूचनाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। धार जिले में ज्ञानदूत के नाम से शुरू की गई परियोजना में सूचनालय बनाकर ग्रामीणों के लिये आवश्यक सभी सूचनाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। हरियाणा की ई–दिशा परियोजना में पूरे राज्य में तहसील स्तर पर केन्द्र खोलकर ग्रामीणों को भूमि रिकोर्ड़, राशनकार्ड़, ड्राईविंग लाईसेंस और जन्म व मृत्यु से सम्बन्धित सेवाएं ऑनलाईन उपलब्ध करवाई जा रही हैं। दिल्ली क्षेत्र में ताराहाट के नाम से शुरू की गई ऑनलाईन सेवा में किसानों को विभिन्न सेवाओं और उत्पादों की सूचनाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

कर्नाटक में राज्य सरकार द्वारा चलाई गई भूमि परियोजना में सरकार ने भूमि दस्तावेजों का कम्प्यूटरीकरण किया है। इस परियोजना में भूमि मालिक सरकारी कार्यालय से अपनी भूमि सम्बन्धी दस्तावेज ले सकता है। इसी प्रकार राजस्थान की ई–मित्र परियोजना में ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाईन सूचनाओं का प्रसार किया जा रहा है। केरल सरकार ने अक्षय नामक परियोजना में ऑनलाईन पोर्टल बनाकर मलयालम भाषा में ग्रामीणों को सूचनाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की है। इस प्रकार राज्य सरकारों द्वारा शुरू की गई इन ऑनलाईन सेवाओं ने ग्रामीण क्षेत्रों में सूचनाओं के प्रसार को बढ़ा दिया है जिसका लाभ ग्रामीणों को आर्थिक और सामाजिक विकास के रूप में देखने को मिला है।

कृषि के लिये सूचना आवश्यकताएं :–

भारत में कृषि करने योग्य भूमि है, साथ ही पूरे साल फसल पैदा करने के योग्य मौसम भी है,लेकिन फिर भी भारतीय किसान कृषि क्षेत्र की अपार सम्भावनाओं का लाभ नहीं उठा पाता। इसका सबसे बड़ा कारण है किसानो तक सही सूचनाओं का सही समय पर ना पहुंच पाना। किसानों को नई खाद, बीज और कीटनाश्को के साथ–साथ वित्त व मौसम से जुड़ी अनेक सूचनाओं की आवश्यकता होती है, ताकि उनका प्रयोग करके वह सही समय पर फसल की बौआई, सिंचाई व कटाई कर सके। इसके साथ–साथ किसानों को अपनी फसल बेचने के लिये उचित मूल्य के बारे में सूचना की अति आवश्यकता रहती है। ऐसा माना जाता है कि सही सूचना ना होने के कारण किसानों को अपनी फसल औने पौने दामों में बेचनी पड़ती है। किसानों को सही सूचना मुहैया करवाकर उनकी आर्थिक स्थिती में सुधार लाया जा सकता है।वर्तमान समय में सूचना के साधनों की भरमार ने सूचना के प्रसार को अति गतिमान कर दिया है। कृषि क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं के प्रसार के लिये इन सूचना माध्यमों का प्रयोग किया जाना बेहद जरूरी है। साथ ही साथ किसान के पास वर्षों से सूचनाओं के कुछ परम्परागत साधन हैं जिनके माध्यम से वह कृषि से जुड़ी सूचनाएं प्राप्त करता है। किसानों के इन परम्परागत सूचना साधनों को भी नवीन सूचना सम्पन्न करना आवश्यक है ताकि किसानों तक सही सूचना का समय रहते संचार किया जा सके।

प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया गया है कि किसानों को कृषि के लिये किन–किन सूचनाओं की आवश्यकता पड़ती है और उन्हे प्राप्त करने के लिये किन–किन माध्यमों का कितना प्रयोग करते हैं। साथ ही किसान द्वारा प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न सूचना स्त्रोत कृषि के लिये कितना सहायक सिद्ध होते हैं।

शोध के उद्देश्य

1कृषि के लिये किसानों द्वारा विभिन्न संचार माध्यम और सूचना स्त्रोतों के प्रयोग के बारे में जानना।
2सूचना स्त्रोतों की कृषि से जुड़ी सूचनाओं की प्राप्ति में सहायता के बारे में जानना।

शोध विधि

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में सिरसा जिले के औढ़ां गांव का चयन किया गया है। औढ़ां गांव का चयन इसलिये किया गया है क्योंकि सिरसा जिले में कुल 6 खण्ड़ हैं जिनमें से औढ़ां भी एक है। इस गांव में कृषि के लिये आवश्यक सभी सूचना स्त्रोत उपलब्ध हैं। इस गांव से आंकड़े एकत्रित करने के लिये 100 किसानों का चयन किया गया है। इन किसानों का चयन दैव निदर्शन विधि से किया गया है।

आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण
कृषि सूचनाओं के लिये समाचार पत्र का प्रयोग

कृषि के लिये समाचार पत्र का प्रयोग		कृषि के लिये समाचारपत्र पढ़ने की अवधि		कृषि के लिये समाचारपत्र से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में समाचारपत्र की सहायता	
समाचार पत्र का नाम	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
दैनिक भास्कर	23	4 घंटे से अधिक	00	मौसम	09	बहुत ज्यादा	6
दैनिक जागरण	20	3 से 4 घंटे	7	फसल मूल्य	37	ज्यादा	28
दैनिक ट्रिब्युन	10	2 से 3 घंटे	27	बीज, खाद और कीटनाशक	32	सामान्य	34
पंजाब केसरी	18	1 से 2 घंटे	28	सभी	02	कम	12
अमर उजाला	5	1 घंटे से कम	18	कोई भी नहीं	20	बिल्कूल नहीं	20
अन्य	4	कभी नहीं	20				
कोई भी नहीं	20						

प्रस्तुत तालिका के माध्यम से यह जानने का प्रयोग किया गया है कि किसान कृषि से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये कौन से समाचार–पत्र का प्रयोग करते हैं। भले ही किसानों में साक्षरता दर की कमी हो लेकिन किसान समाचार पत्र को सूचना स्त्रोत के तौर पर प्रयोग करने में पिछे नहीं हैं। ज्यादातर किसान कृषि से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये किसी ना किसी समाचार पत्र को पढ़ते हैं।

किसान कृषि से सम्बन्धित सूचनाएं प्राप्त करने के लिये सबसे ज्यादा 23 प्रतिशत दैनिक भास्कर का प्रयोग करते हैं। इसी के साथ दैनिक जागरण भी ऐसा समाचार पत्र है जिसका प्रयोग 20 प्रतिशत किसानकृषि से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये करते हैं। जबकि 20 प्रतिशत किसान ऐसे भी हैं जो किसी भी समाचार पत्र का प्रयोग नहीं करते हैं। किसानों द्वारा समाचार पत्र पढ़ने की अवधि के बारे में आंकड़ो से स्पष्ट है कि 55 प्रतिशत किसान 1 से 3 घंटे तक समाचार पत्र पढ़ते हैं।

किसी भी संचार माध्यम का महत्व इसलिए होता है कि हम उससे किस विषय की सूचनाएं प्राप्त करते हैं। सबसे ज्यादा किसान समाचार पत्र से फसल के मूल्य के बारे में सूचनाएं प्राप्त करने के लिये प्रयोग करते हैं। 37 प्रतिशत किसान फसल मूल्य जानने के लिये समाचार पढ़ते हैं। जबकि 32 प्रतिशत किसान खाद, बीज व कीटनाशकों के बारे में सूचना प्राप्त करने के लिये समाचार पत्र को प्रयोग करते हैं। 2 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो सभी प्रकार की सूचनाएं समाचार से ही प्राप्त करते हैं।

34 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो यह मानते हैं कि समाचार पत्र कृषि में सामान्य रूप से सहायक होता है, जबकि 28 प्रतिशत किसानों का मानना है कि समाचार पत्र कृषि से सम्बन्धित सूचनाएं देने ज्यादा सहायक होता है। 6 प्रतिशत किसान समाचार पत्र को कृषि से सम्बन्धित सूचना प्राप्ति में बहुत ज्यादा सहायक मानते हैं। जबकि 12 प्रतिशत किसानों के लिये समाचार पत्र कृषि की सूचनाओं के लिए कम सहायक होता है।

कृषि सूचनाओं के लिये कृषि पत्रिका का प्रयोग

कृषि के लिये पत्रिका का प्रयोग		कृषि के लिये पत्रिका पढ़ने की अवधि		कृषि के लिये पत्रिका से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में पत्रिका द्वारा सहायता	
पत्रिका का नाम	किसानों की संख्या व प्रतिशत	पत्रिका पढ़ने की अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
हरियाणा खेती	11	पुरी पत्रिका	8	मौसम	00	बहुत ज्यादा	1
कोई भी नहीं	89	सम्बन्धित लेख	3	फसल मूल्य	00	ज्यादा	5
		कभी नहीं	89	बीज, खाद और कीटनाशक	9	सामान्य	4
				सभी	2	कम	1
				कोई भी नहीं	89	बिल्कुल नहीं	89

सरकार कृषि से सम्बन्धित सूचनाओं को संचारित करने के लिये कई प्रकार की पत्रिकाओं का प्रकाशन करती है। कृषि में हुई नवीन शोधों को इन पत्रिकाओं के माध्यम से किसानों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है। साथ ही किसानों को बोई गई फसल के रख रखाव के लिये भी परामर्श दिया जाता है।प्रस्तुत तालिका के आंकड़े सरकारी पत्रिका की प्रासंगिकता पर ही सवाल उठाते हैं। उसका कारण है कि ज्यादातर किसान इन पत्रिकाओं का प्रयोग कृषि सम्बन्धी सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये नहीं करते हैं। सिर्फ 11 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो इस पत्रिका को कृषि सूचना स्त्रोत के तौर पर प्रयोग करते हैं। 89 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो कृषि सम्बन्धी सूचनाओं का प्रयोग करने के लिये किसी भी पत्रिका प्रयोग नहीं करते हैं। पत्रिका को प्रयोग करने वाले किसानों में से 8 किसान ऐसे हैं, जो प्रकाशित पत्रिका को पूरा पढ़ते हैं, जबकि 3 किसान ऐसे हैं जो फसल से सम्बन्धित लेखों को ही पढ़ते हैं। 9 किसान पत्रिका को बीज, खाद व कीटनाशक से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये प्रयोग करते हैं, जबकि 2 किसान ऐसे हैं, जो सभी प्रकार की सूचनाओं की प्राप्ति के लिये कृषि पत्रिका का प्रयोग करते हैं। पत्रिका को सूचना स्त्रोत के तौर पर प्रयोग करने वाले कुल 11 किसानों में से 5 किसान इसे कृषि में ज्यादा सहायक मानते हैं, जबकि 4 किसान ऐसे हैं जो पत्रिका को कृषि में सामान्य सहायक मानते हैं। 1 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो पत्रिका को कृषि में बहुत ज्यादा सहायक मानते हैं, वहीं 1 प्रतिशत किसान पत्रिका को कम सहायक के तौर पर देखते हैं।

कृषि सूचनाओं के लिये टेलीविजन का प्रयोग

टेलीविजन चैनल का प्रयोग		टेलीविजन देखने की अवधि		कृषि के लिये टेलीविजन से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में टेलीविजन की सहायता	
चैनल का नाम	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
छूरदर्शन	80	4 घंटे से अधिक	1	मौसम	16	बहुत ज्यादा	5
टोटल टीवी	5	3 से 4 घंटे	24	फसल मूल्य	41	ज्यादा	27
हरियाणा न्युज	5	2 से 3 घंटे	26	बीज, खाद और कीटनाषक	27	सामान्य	34
अन्य	1	1 से 2 घंटे	22	सभी	7	कम	25
कोई भी नहीं	9	1 घंटे से कम	18	कोई भी नहीं	9	बिल्कुल नहीं	9
		कभी नहीं	9				

भले ही नीजि चैनलों के आ जाने के बाद दूरदर्शन को लोग पुराने जमाने का चैनल मानने लगे हों, लेकिन किसान वर्ग आज भी कृषि से सम्बन्धित सूचनाओं की प्राप्ति के लिये दूरदर्शन को ही प्राथमिकता देता है। 80 प्रतिशत किसान टेलीविजन से कृषि सम्बन्धी सूचना प्राप्त करने के लिये दूरदर्शन का प्रयोग करते हैं, यानि दूरदर्शन के सबसे पुराने कार्यक्रमों में से एक कृषि दर्शन आज भी किसानों की पहली पसन्द है। कृषि के लिये सूचना प्राप्ति के लिये दूसरे चैनलों में सिर्फ टोटल टीवी और हरियाणा न्यूज ऐसे हैं, जिनको किसान कृषि से सम्बन्धित सूचनाओं की प्राप्ति के लिये प्रयोग करते हैं। नौ प्रतिशत किसान कृषि सूचनाओं की प्राप्ति के लिये टेलीविजन का प्रयोग नहीं करते हैं।

26 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो रोजाना 2 से 3 घंटे टेलीविजन से सूचनाओं को प्राप्त करते हैं, वहीं 24 प्रतिशत किसान 3 से 4 घंटे रोजाना टेलीविजन से सूचनाओं की प्राप्ति करते हैं। 22 प्रतिशत किसान 1 से 2 घंटे का समय टेलीविजन के सामन व्यतीत करते हैं, वहीं 18

प्रतिशत किसान 1 घंटे से कम टेलीविजन का प्रयोग करते हैं।

टेलीविजन को किसान बोई गई फसल के मूल्य की जानकारी लेने के लिये ज्यादा प्रयोग करते हैं। 41 प्रतिशत किसान टेलीविजन से फसल के मूल्य की जानकारी लेने के लिये कार्यक्रम देखते हैं, वहीं 27 प्रतिशत किसानों को टेलीविजन से फसल के लिये बीज, खाद व कीटनाशक की सूचनाओं की प्राप्ति होती है। 16 प्रतिशत किसान टेलीविजन से मौसम की जानकारी प्राप्त करते हैं, वहीं 7 प्रतिशत किसान ऐसे भी हैं जो कृषि से जुड़ी सभी सूचनाएं टेलीविजन से प्राप्त करते हैं।

टेलीविजन कृषि में सामान्य रूप से सहायक होता है ऐसा मानने वाले किसानों का प्रतिशत 34 है, वहीं 27 प्रतिशत किसान मानते हैं कि टेलीविजन कृषि में ज्यादा सहायक सिद्ध होता है। साथ ही 5 प्रतिशत किसान ऐसे भी हैं जो टेलीविजन को कृषि में बहुत ज्यादा सहायक मानने हैं। 25 प्रतिशत किसानों का मानना है कि टेलीविजन कृषि में कम सहायक होता है।

कृषि सूचनाओं के लिये रेडियो का प्रयोग

कृषि के लिये रेडियो का प्रयोग		कृषि के लिये रेडियो सूनने की अवधि		कृषि के लिये रेडियो से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में रेडियो की सहायता	
स्टेशन का नाम	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
भटिण्डा	32	4 घंटे से अधिक	7	मौसम	14	बहुत ज्यादा	12
हिसार	11	3 से 4 घंटे	17	फसल मूल्य	37	ज्यादा	43
सिरसा	13	2 से 3 घंटे	39	बीज, खाद और कीटनाशक	28	सामान्य	32
सूरतगढ़	29	1 से 2 घंटे	18	सभी	11	कम	3
अन्य	5	1 घंटे से कम	9	कोई भी नहीं	10	बिल्कुल नहीं	10
कोई भी नहीं	10	कभी नहीं	10				

उपरोक्त तालिका के तथ्यों से स्पष्ट है कि किसान आज भी कृषि से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये रेडियो का प्रयोग करते हैं। 32 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो कृषि से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये भटिण्डा एफ.एम. का प्रयोग करते हैं, जबकि 29 प्रतिशत किसान इस उद्देश्य से सूरतगढ़ केन्द्र के कार्यक्रम सूनते हैं। सिरसा शहर में चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय द्वारा सामूदायिक रेडियो का संचालन किया जाता है, जिसके कार्यक्रमों में कृषि से सम्बन्धित सूचनाएं भी रहती हैं, 13 प्रतिशत किसान ऐसे हैं, जो कृषि से जुड़ी सूचनाओं के लिये सिरसा सामुदायिक रेडियों का प्रयोग करते हैं। प्रतिभागी किसानों में 10 प्रतिशत ऐसे किसान भी हैं, जो रेडियो को सूचना स्त्रोत के तौर पर प्रयोग नहीं करते हैं।

रेडियो को सूनने की अवधि के बारे में प्राप्त आंकडों से स्पष्ट है कि ज्यादातर किसान रोजाना कम से कम एक घंटा रेडियो जरूर सुनते हैं। प्रतिभागी किसानों में 39 प्रतिशत किसान रोजाना 2 से 3 घंटे रेडियो को सूनते हैं, वहीं 17 प्रतिशत किसान रोजाना रेडियो पर कार्यक्रम सूनते हैं। प्रतिभागी किसानों ने 7 प्रतिशत किसान ऐसे भी हैं, जो रोजाना 4 घंटों से ज्यादा रेडियो सूनते हैं। 18 प्रतिशत किसान रोजाना 1 से 2 घंटे की अवधि रेडियो के कार्यक्रम सूनने में व्यतीत करते हैं, वहीं 9 प्रतिशत किसान 1 घंटे से कम समय के लिये रेडियो सूनते हैं।

37 प्रतिशत किसान रेडियो को फसल के मूल्य की जानकारी लेने के लिये प्रयोग करते हैं, वहीं 28 प्रतिशत किसान फसल के लिये आवश्यक बीज, खाद व कीटनाशक की सूचनाओं की प्राप्ति के लिये इस्तेमाल करते हैं। 14 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो मौसम से सम्बन्धित सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये रेडियो का प्रयोग करते हैं। वहीं 11 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो रेडियो को कृषि से जुड़ी सभी सूचनाओं की प्राप्ति के लिये प्रयोग में लाते हैं।

प्रतिभागियों में से 43 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिनका मानना है कि रेडियो कृषि में ज्यादा सहायक के तौर पर कार्य करता है, वहीं 12 प्रतिशत किसान रेडियो को कृषि में बहुत ज्यादा सहायक मानते हैं। 32 प्रतिशत किसानों का मानना है कि रेडियो कृषि में सामान्य रूप से सहायक होता है। सिर्फ 3 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो रेडियो को कृषि में कम सहायक मानते हैं, जबकि 10 प्रतिशत किसान रेडियो को कृशि में बिल्कुल भी सहायक नहीं मानते हैं।

कृषि सूचनाओं के लिये इंटरनेट का प्रयोग

कृषि के लिये इंटरनेट का प्रयोग		कृषि के लिये इंटरनेट की अवधि		कृषि के लिये इंटरनेट से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में इंटरनेट की सहायता	
	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
गुगल	2	3 से 4 घंटे	0	मौसम	0	बहुत ज्यादा	0
अन्य	1	2 से 3 घंटे	0	फसल मूल्य	0	ज्यादा	0
सरकार की वेबसाइट	0	1 से 2 घंटे	0	बीज, खाद और कीटनाषक	3	सामान्य	1
कोई नहीं	97	1 घंटे से कम	3	सभी	0	कम	0
		कभी नहीं	97	कोई भी नहीं	97	बिल्कुल नहीं	99

उपरोक्त तालिका में यह जानने का प्रयास किया गया है कि इंटरनेट को किसान कृषि से जुड़ी सूचनाओं के लिये किस प्रकार प्रयोग करते हैं। आंकडों से स्पष्ट है कि ज्यादातर किसान इस संचार माध्यम से किसी प्रकार की सूचना प्राप्त नहीं करते हैं। 97 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो कि इंटरनेट का प्रयोग नहीं करते हैं। दो प्रतिशत किसान गुगल के माध्यम से और एक प्रतिशत किसान किसी अन्य वेबसाईट से सूचना प्राप्त करते हैं। किसान इंटरनेट का प्रयोग बीज, खाद व कीटनाशक की सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये करते हैं। इंटरनेट को प्रयोग करने वाले किसान इसका प्रयोग रोजाना एक घंटे से कम करते हैं। एक प्रतिशत का मानना है कि इंटरनेट कृषि में कम सहायक होता है जबकि 99 प्रतिशत किसानों का मानना है कि इंटरनेट कृषि में बिल्कुल भी सहायक नहीं होता है।

कृषि सूचनाओं के लिये मोबाईल का प्रयोग

कृषि के लिये मोबाईल का प्रयोग		कृषि के लिये मोबाईल प्रयोग की अवधि		कृषि के लिये मोबाईल से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में मोबाईल की सहायता	
	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
एयरटेल	30	4 घंटे से अधिक	0	मौसम	01	बहुत ज्यादा	5
बी.एस.एन.एल	32	3 से 4 घंटे	4	फसल मूल्य	52	ज्यादा	25
आइडिया	21	2 से 3 घंटे	40	बीज, खाद और कीटनाशक	25	सामान्य	42
वोडाफोन	8	1 से 2 घंटे	42	सभी	21	कम	27
टाटा	6	1 घंटे से कम	13	कोई भी नहीं	1	बिल्कुल नहीं	1
अन्य	2	कभी नहीं	1				
कोई भी नहीं	1						

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि किसान भी मोबाईल का प्रयोग कृषि के लिये करते हैं। 99 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिनके पास मोबाईल है। 32 प्रतिशत किसान सरकारी उपक्रम बीएसएनएल का मोबाईल प्रयोग करते हैं,वहीं 30 प्रतिशत किसान एयरटेल की मोबाईल सेवा प्रयोग में लाते हैं। 21 प्रतिशत किसानों के पास आइडिया की सिम है तो 8 प्रतिशत किसान वोडाफोन और 6 प्रतिशत किसान टाटा के सिम का प्रयोग करते हैं। सिर्फ प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो मोबाईल का प्रयोग नहीं करते हैं।

फसल मूल्य एक ऐसी सूचना है जो किसानों के लिये अति आवश्यक होती है। रोजाना बाजार में होते उतार– चढ़ाव के कारण फसल मूल्य में अनिश्चितता बनी रहती है। किसान फसल मूल्य की सूचनाओं के लिये मोबाईल को सबसे ज्यादा प्रयोग करते हैं, 52 प्रतिशत ऐसे किसान हैं जो फसल मूल्य की जानकारी मोबाईल के माध्यम से प्राप्त करते हैं, वहीं 25 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिनको बीज, खाद व कीटनाशक की सूचना प्राप्ति मोबाईल के माध्यम से होती है। तालिका में एक आंकड़ा ऐसा भी है जो कृषि में मोबाईल के महत्व को दर्शाता है, 21 प्रतिशत किसान कृषि के लिये आवश्क सभी सूचनाओं को प्राप्त करने के लिये मोबाईल का प्रयोग करते हैं।

42 प्रतिशत किसान कृषि से सम्बन्धित सूचनाओं की प्राप्ति के लिये रोजाना 1 से 2 घंटे मोबाईल फोन का प्रयोग करते हैं, वहीं 40 प्रतिशत किसान रोजाना 2 से 3 घंटे मोबाईल को कृषि के लिये प्रयोग करते हैं। चार प्रतिशत किसान ऐसे भी हैं जो मोबाईल को रोजाना 3 से 4 घंटे भी प्रयोग करते हैं। सिर्फ 13 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिनकी मोबाईल प्रयोग करने की अवधि रोजाना 1 घंटे से कम है।

मोबाईल के कृषि से सम्बन्धित सूचना प्राप्त करने में सहायक होने के बारे में आंकडे मिले जुल हैं, जहां 42 प्रतिशतइसे कृषि सूचना के स्त्रोत के रूप में सामान्य पाते हैं, वहीं 25 प्रतिशत इसे ज्यादा सहायक और 5 प्रतिशत बहुत ज्यादा सहायक मानते हैं। 27 प्रतिशत किसान

ऐसे भी हैं जो इस संचार माध्यम को कृषि सूचनाओं की प्राप्ति में कम सहायक मानते हैं, वहीं 1 प्रतिशत किसान मोबाईल को कृषि में बिल्कुल भी सहायक नहीं मानते हैं।

कृषि सूचनाओं के लिये पंचायत का प्रयोग

कृषि के लिये पंचायत का प्रयोग		कृषि के लिये पंचायत मे बैठने की अवधि		कृषि के लिये पंचायत से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में पंचायत की सहायता	
सदस्यों की संख्या	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
15 से अधिक	13	4 घंटे से अधिक	3	मौसम	2	बहुत ज्यादा	30
10 से 15	37	3 से 4 घंटे	26	फसल मूल्य	13	ज्यादा	36
5 से 10	35	2 से 3 घंटे	45	बीज, खाद और कीटनाशक	38	सामान्य	22
5 से कम	14	1 से 2 घंटे	23	सभी	46	क्म	11
कोई भी नहीं	1	1 घंटे से कम	2	कोई भी नहीं	1	बिल्कुल नहीं	1
		कभी नहीं	1				

उपरोक्त तालिका के आंकडों से स्पष्ट है कि ज्यादातर किसान पंचायत को सूचना प्राप्ति के स्त्रोत के रूप में प्रयोग करते हैं। 99 प्रतिशत किसान रोजाना पंचायत में सूचनाओं का आदान प्रदान करते हैं। पंचायत में बैठने वाले सदस्यों की संख्या के लिहाज से देखा जाये तो 37 प्रतिशत किसान हैं, जो 10 से 15 लोगों के साथ बैठकर अपनी सूचनाओं का आदान प्रदान करते हैं, वहीं 35 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो 5 से 10 किसानों के साथ बैठकर बातचीत करते हैं। 13 प्रतिशत किसान 15 से अधिक लोगों के समूह में संचार करते हैं, जबकि 14 प्रतिशत किसान 5 से कम सदस्यों के समूह में बैठकर सूचनाओं का आदान प्रदान करते हैं, जबकि सिर्फ एक प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो कभी पंचायत को सूचना प्राप्ति के तौर पर प्रयोग नहीं करते हैं।

प्रतिभागी किसानों में 45 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो रोजाना 2 से 3 घंटे का समय पंचायत में बिताते हैं। 26 प्रतिशत किसानों का कहना है कि वे रोजाना 3 से 4 घंटे पंचायत में संचार करने में बिताते हैं, वहीं 3 प्रतिशत किसान ऐसे भी हैं, जो रोजाना 4 घंटे से ज्यादा पंचायत में बैठते हैं। 23 प्रतिशत किसान रोजाना 1 से 2 घंटे के लिये पंचायत में बैठते हैं, वहीं 2 प्रतिशत किसान रोजाना एक घंटे से कम समय पंचायत में व्यतीत करते हैं।

पंचायत को कृषि सूचना के स्त्रोत के तौर पर देखा जाये तो आंकड़े दर्शाते हैं कि किसान पंचायत से सभी सूचनाओं की प्राप्ति करते हैं।यानी पंचायत आज भी किसानों के लिये सूचना प्राप्ति का सबसे बड़ा स्त्रोत है। 46 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो कृषि से सम्बन्धित सभी सूचनाओं की प्राप्ति के लिये पंचायत में संचार करते हैं। 38 प्रतिशत किसान फसल के लिये आवश्यक बीज, खाद व कीटनाशकों से जुड़ी सूचनाओं की प्राप्ति के लिये पंचायत का सहारा लेते हैं। 13 प्रतिशत किसान फसल मूल्य के बारे में सूचनाएं पंचायत से प्राप्त करते हैं। वहीं 2 प्रतिशत किसान मौसम की सूचना प्राप्त करने के लिये पंचायत का प्रयोग करते हैं।

पंचायत किसानों के लिये कृषि में काफी सहायक साबित होती है। 36 प्रतिशत किसानों का मानना है कि पंचायत कृषि से जुडी सूचनाओं को प्राप्त करने में ज्यादा सहायक सिद्ध होती है, वहीं 30 प्रतिशत किसानों का मानना है कि पंचायत कृषि सूचनाओं की प्राप्ति में बहुत ज्यादा सहायक साबित होती है। 22 प्रतिशत पंचायत को कृषि सम्बन्धित सूचनाओं की प्राप्ति में सामान्य रूप से सहायक मानते हैं, वहीं 11 प्रतिशत इसे कम सहायक के रूप में देखते हैं।

कृषि सूचनाओं के लिये सरकारी प्रदर्शनी का प्रयोग

कृषि के लिये सरकारी प्रदर्षनी का प्रयोग		कृषि के लिये प्रदर्षनी देखने की संख्या		कृषि के लिये प्रदर्षनी से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में प्रदर्शनी की सहायता	
	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
अपने गांव में	43	5 से अधिक	4	मौसम	00	बहुत ज्यादा	2
अन्य गांव में	24	5	2	फसल मूल्य	00	ज्यादा	13
जिला मुख्यालय में	2	4	11	बीज, खाद और कीटनाशक	36	सामान्य	42
कभी नहीं	31	3	22	कृषि यंत्र	20	कम	12
		2	21	नई कृषि पद्धतियां	13	बिल्कुल नहीं	31
		1	9	सभी	00		
		बिल्कुल नहीं	31	कोई भी नही	31		

सरकार द्वारा किसानों को कृषि की नई तकनीकों व पद्धतियों के बारे में जागरूक करने के लिये ग्राम स्तर पर, खण्ड व जिला स्तर पर प्रदर्शनियों का आयोजन करवाया जाता है। 43 प्रतिशत किसानों ने कृषि से जुड़ी प्रदर्शनियों को अपने गांव में ही देखा है जबकि 24

प्रतिशत किसानों ने अन्य गांव में जा कर सरकारी कृषि प्रदर्शनी को देखा है। 31 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिन्होने कभी भी कृषि प्रदर्शनी नहीं देखी है। 2 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिन्होने जिला मुख्यालय पर प्रदर्शनी देखी है।

22 प्रतिशत किसान अपने जीवन 3 बार सरकारी प्रदर्शनी देख चुके हैं, वहीं 21 प्रतिशत किसानों ने 2 बार सरकारी कृषि प्रदर्शनी को देखा है। 11 प्रतिशत किसान 4 बार कृषि प्रदर्शनी देख चुके हैं, 9 प्रतिशत किसानों ने 1 बार कृषि प्रदर्शनी को देखा है जबकि 4 प्रतिशत किसान 5 से अधिक बार कृषि प्रदर्शनी में जा चुके हैं।

36 प्रतिशत किसानों ने खाद, बीज व कीटनाशकों की सूचना प्राप्ति कृषि प्रदर्शनी से की वहीं 20 प्रतिशत किसानों ने कृषि यंत्रों के बारे में सूचना प्राप्ति के लिये कृषि प्रदर्शनी का प्रयोग किया। 13 प्रतिशत किसानों ने सरकारी प्रदर्शनी से कृशि की नई पद्धतियों के बारे में सूचनाएं प्राप्त की।

42 प्रतिशत किसानो का मानना है कि सरकारी प्रदर्शनी कृषि से सम्बन्धित सूचनाएं प्राप्त करने में सामान्य सहायक होती है, वहीं 13 प्रतिशत किसानों को सरकारी प्रदर्शनी ज्यादा सहायक लगती है। 12 प्रतिशतकिसान सरकारी प्रदर्शनी को कम सहायक मानते हैं। वहीं 2 प्रतिशत किसान सरकारी प्रदर्शनी को कृषि सूचनाओं की प्राप्ति में बहुत ज्यादा सहायक मानते हैं।

कृषि सूचनाओं के लिये कृषि कार्यालय का प्रयोग

कृषि के लिये कृषि अधिकारी से सम्पर्क		कृषि के लिये कृषि अधिकारी से सम्पर्क की संख्या		कृषि के लिये कृषि अधिकारी से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में कृषि अधिकारी की सहायता	
	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिशत
खण्ड कृषि अधिकारी	15	मासिक	07	कृषि यंत्र	09	बहुत ज्यादा	18
कृषि विकास अधिकारी	25	पाक्षिक	03	अनुदान	32	ज्यादा	41
क्षेत्र निरीक्षक	32	साप्ताहिक	40	खाद,बीज व कीटनाशक	36	सामान्य	26
अन्य	19	रोजाना	41	सरकारी योजनाएं	14	कम	08
किसी से नहीं	09	कभी नहीं	09	कोई नहीं	09	बिल्कुल नहीं	09

हरियाणा सरकार ने प्रदेश भर में प्रत्येक खण्ड़ में कृषि कार्यालय खोले हैं, जहां से किसान कृषि से जुड़ी आवश्यक सभी सूचनाएं प्राप्त कर रहे हैं। प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि किसान सूचना प्राप्ति के लिये कृषि कार्यालय का प्रयोग करते हैं। सबसे ज्यादा 32 प्रतिशत किसान कृषि कार्यालय में क्षेत्र निरीक्षक से कृषि सम्बन्धी सूचनाओं के लिये सम्पर्क करते हैं। 15 प्रतिशत किसान कृषि कार्यालय में खण्ड कृषि अधिकारी से सम्पर्क करते हैं, वहीं 25 प्रतिशत किसान कृषि विकास अधिकारी से सूचनाओं की प्राप्ति करते हैं। 19 प्रतिशत किसान कृषि कार्यालय में कृषि से जुड़ी जानकारी लेने के लिये अन्य कर्मचारियों से सम्पर्क करते हैं जबकि 09 प्रतिशत किसान सूचनाओं की प्राप्ति के लिये कृषि कार्यालय का रूख नहीं करते हैं।

ग्रामीण क्षेत्र में 41 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जो रोजाना कृषि कार्यालय से सूचनाओं की प्राप्ति करते हैं वहीं 40 प्रतिशत किसान साप्ताह में एक बार कृषि कार्यालय से सूचना प्राप्त करते हैं। सातप्रतिशत किसान माह में एक बार कृषि कार्यालय जाते हैं, वहीं 3 प्रतिशत किसान कृषि कार्यालय माह में 2 बार सम्पर्क करते हैं।

सबसे ज्यादा किसान 36 प्रतिशत कृषि अधिकारियों से बीज, खाद व कीटनाशकों से जुड़ी जानकारियों या सलाह लेते हैं, वहीं 32 प्रतिशत किसान सरकार द्वारा दी जाने वाली अनुदान के बारे में सूचनाओं लेने के लिये कृषि कार्यालय जाते हैं। 14 प्रतिशत किसानों का कृषि कार्यालय जाने का उद्देश्य सरकारी योजनाओं के बारे में जानना रहता है, वहीं 09 प्रतिशत किसान कृषि यंत्रों से जुडी सूचनाओं की प्राप्ति के लिये कृषि कार्यालय का रूख करते हैं।

41 प्रतिशत किसान कृषि कार्यालय को कृषि सूचना की प्राप्ति में बहुत ज्यादा सहायक मानते हैं, वहीं 26 प्रतिशत किसान इसे सामान्य सहायक मानते हैं। 18 प्रतिशत किसानों के लिये कृषि कार्यालय कृषि सूचनाओं की प्राप्ति में बहुत ज्यादा सहायक सिद्ध होता है जबकि 8 प्रतिशत किसानों के लिये कृषि कार्यालय कम सहायक सिद्ध होता है।

कृषि सूचनाओं के लिये टोल फ्री नम्बर का प्रयोग

कृषि के लिये टोलफ्री नम्बर का प्रयोग		कृषि के लिये टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क की संख्या		कृषि के लिये टोल फ्री नम्बर से प्राप्त सूचना का विषय		कृषि में टोल फ्री नम्बर की सहायता	
	किसानों की संख्या व प्रतिशत	अवधि	किसानों की संख्या व प्रतिशत	सूचना का विषय	किसानों की संख्या व प्रतिशत	कृषि में सहायक	किसानों की संख्या व प्रतिषत
1800–180–1551	03	मासिक	02	मौसम	0	बहुत ज्यादा	2
अन्य	0	पाक्षिक	01	फसल मूल्य	0	ज्यादा	0
कोई भी नहीं	97	साप्ताहिक	0	बीज, खाद और कीटनाशक	2	सामान्य	0
		दैनिक	0	सभी	1	कम	1
		कभी नहीं	97	कोई भी नहीं	97	बिल्कुल नहीं	97

संचार को गति देने के लिये केन्द्र सरकार ने राज्य में टोल फ्री नम्बर की व्यवस्था की है, जहां से किसान सीधे कृषि वैज्ञानिकों से बात करके सूचनाओं की प्राप्ति कर सकते हैं, लेकिन ज्यादातर किसान इस टोल फ्री नम्बर का प्रयोग नहीं करते हैं। 97 प्रतिशत किसान ऐसे हैं जिन्होने कभी भी टोल फ्री नम्बर का प्रयोग करके सूचना प्राप्त नहीं की है। सिर्फ 3 प्रतिशत किसान ऐसे हैं, जो टोल फ्री नम्बर से सूचना प्राप्त करते हैं। टोल फ्री नम्बर को प्रयोग करने वाले किसानों में से 2 प्रतिशत किसान महीने में एक बार टोल फ्री नम्बर से सूचना प्राप्त करते हैं, वहीं 01 प्रतिशत किसान माह में 2 बार टोल फ्री नम्बर से सूचनाओं की प्राप्ति करता है। कुल किसानों में से 2 प्रतिशत किसान बीज, खाद और कीटनाशक से जुड़ी सूचनाओं के लिये टोल फ्री नम्बर नम्बर का प्रयोग करते हैं, वहीं 1 प्रतिशत किसान सभी सूचनाओं के लिये टोल फ्री नम्बर को प्रयोग में लाते हैं। टोल फ्री नम्बर की कृषि सूचनाओं में सहायता के बारे में 2 प्रतिशत किसानों का मानना है कि यह कृषि सूचनाओं में बहुत ज्यादा सहायक साबित होता है, वहीं 1 प्रतिशत किसानों का मानना है कि टोल फ्री नम्बर कृषि सूचनाओं की प्राप्ति में कम सहायता करता है। 97 प्रतिशत किसानों का कहना है कि टोल फ्री नम्बर कृषि सूचनाओं की प्राप्ति के लिये बिल्कुल भी सहायक नहीं होता।

निष्कर्ष

वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति के पास सूचना प्राप्ति के लिये विभिन्न संचार माध्यम उपलब्ध हैं। परम्परागत सूचना माध्यमों के साथ–साथ कई ऐसे नये संचार माध्यम हैं, जिनका प्रयोग कृषि सम्बन्धित सूचनाओं के प्रसार के लिये किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध से यह सामने आया है कि किसान कृषि के लिये आवश्यक सूचनाओं कोप्राप्त करने के लिये कई प्रकार के सूचना स्त्रोतों का प्रयोग करते हैं। किसानों को कृषि के लिये मुख्यतः मौसम, फसल मूल्य, बीज, खाद, कीटनाशक, कृषि यंत्र और सरकारी योजनाओं से सम्बन्धित सूचनाओं की जरूरत पड़ती है।जिन्हे प्राप्त करने के लिये किसान समाचार पत्रों में से दैनिक भास्कर और दैनिक जागरण को सबसे ज्यादा प्रयोग करते हैं, वहीं कृषि पत्रिका का प्रयोग किसान ना के बराबर करते हैं। रेडियो आज भी कृषि से जुड़ी सूचनाओं के लिये किसानों का मुख्य सूचना स्त्रोत बना हुआ है। नये संचार माध्यमों में से मोबाईल ऐसा सूचना स्त्रोत है जिसका किसान बहुतायत में प्रयोग करने लगे हैं। यह संचार माध्यम किसानों का कृषि में मुख्य सहायक के तौर पर उभरा है।टेलीविजन में आज भी किसान दूरदर्शन के कृषि दर्शन कार्यक्रम के माध्यम से कृषि सूचनाओं की प्राप्ति करते हैं, नीजि टेलीविजन चैनलों की प्राथमिकता में आज भी कृषि सूचनाएं शामिल नहीं है। इंटरनेट जैसे नये संचार माध्यम से किसान अब भी अनजान हैं और उसका प्रयोग कृषि से जुड़ी सूचना प्राप्ति के लिये नहीं करते हैं, इसके अलावा सरकार द्वारा कृषि वैज्ञानिकों से सीधे संवाद स्थापित करने के लिये शुरू किये गये टोल फ्री नम्बर से भी किसान अभी तक इतना परीचित नहीं हो पाये हैं, ज्यादातर किसानों को टोल फ्री नम्बर का पता नहीं है। सरकार द्वारा स्थापित कृषि कार्यालय किसानों के लिये मुख्य सूचना स्त्रोत बना हुआ है, खासकर कृषि अनुदान औरकृषि यंत्रों से सम्बन्धित सूचनाओं के लिये कृषि कार्यालय किसानों के लिये काफी कारगर साबित होता है।

ग्रामीण क्षेत्र में किसान अपने साथी किसानों के साथ बातचीत करने के लिये पंचायत में बैठते हैं। यह ग्रामीणों की सूचना प्राप्ति और प्रसार का मुख्य साधन है, जिसके माध्यम से किसान ज्यादातर कृषि सूचनाओं की प्राप्ति करते हैं। वर्षों से चला आ रहा यह परम्परागत संचार माध्यम आज भी किसानों की कृषि सूचनाओं की प्राप्ति में मदद करता है। ज्यादातर किसान दैनिक जीवन की सभी सूचनाओं की प्राप्ति के लिये पंचायत का ही सहारा लेते हैं। बहुत बार सरकार किसानों तक नई कृषि पद्धतियों और तकनीकों को पहुंचाने के लिये ग्राम स्तर, खण्ड़ स्तर व जिला स्तर पर कृषि प्रदर्शनियों का आयोजन करवाती है, लेकिन किसानों के लिये यह सूचना स्त्रोत कोई ज्यादा सहायक सिद्ध नहीं होता है। ज्यादातर किसानों ने सूचना प्राप्ति के लिये सरकारी कृषि प्रदर्शनी का अवलोकन कभी नहीं किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1.A. Vaidyanathan,"India's Agricultural Development Policy", Economic and Political Weekly, Vol. 35, No. 20 (May 13-19, 2000), pp. 1735-1741 http://www.jstor.org/stable/4409295 Accessed: 03/08/2010 00:56
2.Bruno Dorin,"For a Second Green Revolution: A Seminar Report", Economic and Political Weekly, Vol. 35, No. 23 (Jun. 3-9, 2000), pp. 1893-1895,

http://www.jstor.org/stable/4409350 Accessed: 03/08/2010 01:01
3.C. T. Kurien,"Dynamics of Rural Transformation: A Case Study of Tamil Nadu", Economic and Political Weekly, Vol. 15, No. 5/7, Annual Number (Feb., 1980), pp. 365-367+369+371+373-375+377-379+381+383+385-387+389-390,
http://www.jstor.org/stable/4368379 Accessed: 03/08/2010 03:23
4.Dipankar Sinha, "Communication and Development", Economic and Political Weekly, Vol. 29, No. 18 (Apr. 30, 1994), pp. 1069-1070, http://www.jstor.org/stable/4401138 Accessed: 03/08/2010 03:34
5.D. N., "ICTs in Rural Poverty Alleviation", Economic and Political Weekly, Vol. 36, No. 11 (Mar. 17-23, 2001), pp. 917-920,http://www.jstor.org/stable/4410397 Accessed: 03/08/2010 03:17
6.G. Niranjan Rao and K. Narayanan Nair, "Change and Transformation in Rural South India: Findings from Village Studies", Economic and Political Weekly, Vol. 38, No. 32 (Aug. 9-15, 2003), pp. 3349-3354, http://www.jstor.org/stable/4413879, Accessed: 03/08/2010 03:40
7.KUTTAYAN ANNAMALAI, SACHIN RAO,"What works: ITC's E-choupal and profitable rural transformation,"The micro enterprise development division of the united states agency for international development (USAID), through the seep network's practitioner learning program, August 2003, www.bdsknowledge.org/dyn/bds/.../ITC%20e-choupal%20India.pdf
8.Paul DiMaggio, Eszter Hargittai, W. Russell Neuman, John P. Robinson, "Social Implications of the Internet", Annual Review of Sociology, Vol. 27 (2001), pp. 307-336,
http://www.jstor.org/stable/2678624 Accessed: 03/08/2010 02:40
9.S.C. Mittal,"Information Technology in Agriculture",General Manager, Indian Farmers Fertiliser cooperative Limited,34 Nehru Palace, New Delhi,
http://www.iffco.nic.in/applications/brihaspat.nsf/c75c8a47921f71b0e525656900233970/0238215a7f658fd765256a6100332018/$FILE/scm_pantnagar.pdf
10.Vayyavuru Sreenivasulu and H.B. Nandwana' "Networking of Agricultural Information systems and services in India", INSPEL 35(2001)4, pp. 226-235
11.डॉ0 अनिता मोदी, 'गांवों को ज्ञान क्रांति से जोड़ने की कोशिश', कुरूक्षेत्र, अप्रैल 2009, पृ.सं.– 17
12.अश्विनी शर्मा, 'अब एसएमएस से सीखें खेती के गुर', दैनिक जागरण, 29 दिसम्बर,2010, पृ.सं.–01
13.देविंदर शर्मा, 'खतरे में खेती', दैनिक जागरण, पृ.सं.–6, दिनांक– 2 सितम्बर 2010.09.
14.दिलीप बॉब, 'बहुत बदल गया चेहरा गांव का', आवरण कथा, इंड़िया टुड़े, 17 फरवरी 2010, पृष्ठ सं0– 18–19
15.दिनेश श्रीवास्तव,'गांव–गांव को जोडती सूचना तकनीक', कुरूक्षेत्र, अप्रैल 2009, पृ.सं.–12
16.जतिन कुमार,'संचार क्रांति ने खोले गांवों में रोजगार के द्वार', कुरूक्षेत्र–जनवरी2011, पृ.सं.–10
17.जीवन कुमार सारस्वत व पुनीत शर्मा, 'सूचना तकनीक से बदलती गांवों की दुनिया', कुरूक्षेत्र, अप्रैल 2009, पृ.सं.–31
18.जोगेन्द्र शर्मा, 'गांवों में पैर पसारते संचार माध्यम', कुरूक्षेत्र, अप्रैल 2009, पृ.सं.–7
19.'मोबाईल से गरीबी भी होती है दूर', 16 अक्तुबर 2010, दैनिक जागरण पृष्ठ सं.–9
20.नितेश कुमार श्रीवास्तव,'ग्रामीण भारत और सूचना प्रौद्योगिकी', कुरूक्षेत्र, अप्रैल 2009, पृ.सं.–3
21.राजीव कुमार, 'ग्रामीण विकास के लिए चाहिए नया दृष्टिकोण', कुरूक्षेत्र, जनवरी 2009, पृ.सं.–14
22.'सिर्फ पैसा ही हल नहीं–कृषि को चाहिए सम्पूर्ण सुधार', सम्पादकीय, इकोनोमिक्स टाईम्स,15 जुलाई 2007, पृ.सं.–6
23.विजय कुमार शर्मा, 'गांवों में समृद्धि की राह दिखाता सूचना प्रौद्योगिकी ऋण', कुरूक्षेत्र,जून 2011, पृ. सं.–15

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net